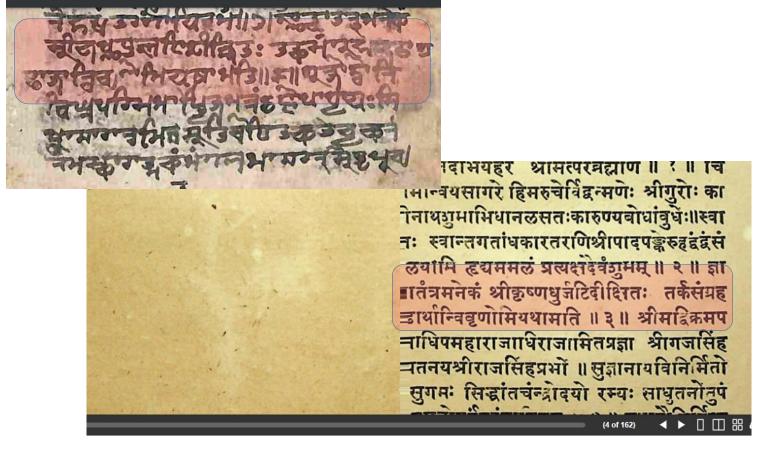
(Annama Bhatta's Tarka Sangra with Commentary by Krishna Dhurjati Dikshit)



Tarka Sangraha Of Annama Bhatta With Siddhanta Chandrodaya Commentary By Krishnadatta Sharma 1896 (damaged Pages) Victoriya Press Mumbai by Victoriya Press Mumbai



 $Ref: \underline{https://archive.org/details/XDSI\ tarka-sangraha-of-annama-bhatta-with-siddhanta-chandrodaya-commentary-by-krishna/page/n3/mode/2up$

उचा वरा प्रश्राम्भू नरान् रम्छ नंभरियानचित्रिकाधिक व के विक् क मजावासिष्ट प्रभानि । यो जी जिल काना वा उर्वा अन्तर्वा विमिन्न र्रिक्ष । उक्क ने भागिति विभयीति राष्ट्र उक्तः पृष्ट्रिक्यम् मुक्तः नोर्ने प्रेयलया रंभगेत्रा यीमानीमा विद्युवेड्या ।। नामभारे लेवस्माकी उन्भेड़ थः। यस द्वुष्ण क्रिंगम् कार्या निम्न निम्न निम्न निम्न रा । निवासी निवासी निवासी विग्नः॥धरीवान्तर उपात्र रामन्त्रन वनक/भार्ययान राज्यस्थ प्रविष्यिति। भाषन'नयमनवपुय थान उर्फ्रनचेर्नः। उर्याप्य वि क्षां स्त्राच्या स्त्राच्या स्था य कि डिक छुने भर दे रेस कि डिड रे र नगर से नंधव देवे विकवः । भार प्रमध्यम् १३नं प्रीतन्त्रम् १५३

ग्रेडियक्षत्रिमिक्का । धरीवायः लमा ल्याम्पादिक्षः मान्यान् निर्मा ग्रेस सीननीयाद्रयत्र प्रयननिष्यम गुउराष्ट्रिन्सिक्विक्रित्य्य ज्ञाचल धनन्य जिल्ला समिति। उपास ज्ञेषाभित्रम्भिष्ठस्त्राची। उरस्तानानि येनहर्वात्रिह्यः। मरण्यात्रक लक्ष्रक्रेमेन्छी उद्यम्भेरानः। न्त्रंमीत्रं प्रनास्का स्वभूति हे नक्ष्यः । शिकिमद्र के अंग्रेट ग्रेज्य व्यवस्क उराज्य र त्राक्षेत्र क्षेत्र कार्य उ मुद्रा निर्णयेति। विसे मेरण्यक उपमे भार्ष पुरुषिभनिभित्रणय निक्रंण्यु क्रम्बर्ने निष्विक्येड्यः। निष्युक्रम् नेर्भभक्ष्यान्य यनभाउयुत्राम्स्य श्रीचित्रपुष्य असूर प्रोप्त सुनक्सन १० भन्यपम् क्रिटिस्यमन जो। जिले ध्रमीकारूने नुस्थिय वद्य हुन। । ने व रम्झूलं इसमायोग्ध्य द्वा उसामा सीमाध्या यनिमेसुन्वारिभ अनिम का च्यवेडिप्रेयमा

यरेमग्रहानम्बासु गर्ग्धेवध्याद्वीय वकारीिकाइच्छी था विक्रमु क्षेत्र रूक उर्वादिशिववेकः। इतिस्वरुख्या न्यस्त्र लन्सम्धिप्रिक्रिक्रे **चर्चे भारतभारे प्रभारत्या है।।** नामिक यू जे भक्त ला छ चे पिमाभाष्ट्रस्य म् च्याविक क्विक मार्गिक में या इस्ग्यायुक्वण्यास्य यस्य मिष्ट मस्या उर्यान कर्म स्थान धिकण्णज्ञास्य कन्यने न जयह किमार एवं जी निर्मिक के जी कर कारलभागियभिति द्योगयन सिकः न् उभन्न नक्ः श्वय प्रमध्वकथान्मभ भिभवाती। मेरविष्टित्रभनाक्षात्रात्रात्रा यभक्त निर्वे विश्व विष्य विश्व विश्य क्षान उभद्रसम्बिक निराजकार उक्दे किंभ निम्मिन महाने महिन्ति उक्र वु उक् मने निक्य मित्र भिर् गार्विषयम् जा इसिप्रविष्ट्राभान्य व नगक्क इंद्रहरू वर चराने कि र विश्वनिक्य हिन्दिस्मिथिक

यग्रयक्रनं। ज्ञानानं भूषविण्य नियं उद्या प्रमान्द्र ।। इत्या प्र दम्भाव्यक्षिम्भभवायकवः भंप्रस्काः उर्द्दा भिर्मावन्प रचेयुक्यक निर्मायुभनं सिनवेच ॥ अविमेधल्मा । यह धुन्याः विषयर नियाउवारिमानिए र्जिय विवस्ति उर। भागमाउनाग्रम् सम्बद्धिके भाग्या नः। भागः सिश्चिमिश्च ग्रहीन्य निर्धि वदानभावमान्यद्रभाष्ट्रिक्कम्ब्रिक मानगण्यक्त्रार्टिके रवरन् भूबा नेरेग्रिकार्यां कर्यां कराने विक्रि मुनुग्रहिन । मुद्दुम् दल बस्कृत निक्क्य डीउ।भवाधः न्यूनुभुन्नश्चीव थ्यं अभागवरुला भागपुस्यू । उत्तर्व हत्या विषक्षित्रकार्मा भागीन यह वह दिन डिभद्रलबरः॥३३६ मुभेबारेकाब उराम्बर्भावन्थान्याम् विकारित्व

3

9

विश्वक्षिक्यला नमाभा नामा भागाम् यहले भाष्ट्र मृष्ट्रिम् व्यापा कियान्त्रमं भ इलवलमा।इड्विक्ट्डिड्रिके उर्भायपात्रभप्तः नवविष्ठित्रकृति उत् नवेच्छन्यः। पूर्वे त्रेनिवेष्ण वर्षे मभवारिकाल इंबा प्रचामा उनिम लभाग्वराष्ट्रमार्थ्या । दुर्गित्मारायका अभिक्रि प्रविश्व उपारण्य उपार्ष्टिश्व विश्व नेल्डविड्नभनं न्यामण्य विणया मुब्द्रकितिहः । नन्युरिया न्य भागानम्बर्धाः भंग्याः र्वियाद्यासभागयकेन न्याद्वा मान्सामग्रीकर्णा उल्लेखिक नेष्ट उन्नेलक धेवकर हर नियमकर िरिक्रम्बमा। गुल्ममम्मिक्रल्य उ वित्र विश्व सिक्य विश्व के विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व उधानायाविति भूती सुनम्भवा

उपम्मणनुस्व निर्मणन्याव न्नां स्योगीयकणप्य द्वापा द्वापा

नाम विमेक्षण ही उपकृ ही नियु न्स्यू लेकाला भक्तकारी कल्पन्या। विनेत्रालिश्वम्य ज्ञान्त्र स्ने कष्टार्थिभद्रकानीडकल्यनाडी। यह भाषय रेने इस् वाप विसंध पाडी न प्रधान के मन्त्र मान्य मान्य प्रचार मन्त्राउन्थलिक नायि। इवस्था चनकंभयोगचित्र नम्माः भेयोगावर मंद्वायनिम्न भिटे उस्ति र या जा । माउरिजाउम:क्लाने उर्गिष्ठक रिस्ताने मनीव वाडा उसमें दुर्द मक्रिया भागात्र का बार्गिया विश्व उस्तिवहार अभन्तपडभास स्थाप भवत्स्वित्रम् व क्रम्याराष्ट्रक् कम्द्रभार एकिमरहाक करिया दुर्ये उपरमा । नीलं उमः यत्र जीविष् अिक्सः उन्नस्यन्थिक भम्द्र हेर उभक्षेत्र जिल्हा । इस निर्वसाम्बन्दियाम्भाग जन्निक मान्यवन्त्री मुह्देश्वला

काला के वित्रियमिक विक्रियमी॥ दृष्टक प्रिक्सिकिशाम खुवानु लेश प्रस्कृतिक विज्ञिपुराज्यास्त्रमध्यानम् भागञ् हो विक्रिपुरा ज्याविस्प्राम्भाष्ठि विमित्रकुर्न्डगाउपरमगत्रभगत्रभामः भक्षप निमन्नथाव व्यस्यान्वह गोप्या अव व्युवः भाषमः विद्वा है विश्व या में के वि मेपक भारत करा करा है। यह र वस्रविरेष प्रशिवेद्या न्यस्था गर्यस्था नन्ध्यत्रे हन्। भर्ने ने दिनी हुन मार है। यह दिन कार्म उनिरुपलभाष्ट्रम्बिक्ट डाउर्यनिक क्रमर्ट्याउन्तर्भिक्षभिक्षभिक्षभिक्षभिक्ष यगभावायकार्यकार्यकार्या एभळ्छ धुरु उउ है। भेरोग भभवारिका न्भिति।क्राप्भक्भेय्धा भाविक विष्युक्त अंशीः। उत्रिक्तिक्त यभ्य उन्तर्भाग्याने । जिल्लाम् । डिगम्बेरेनेथानुविरंगः।ऽदिक्यमम्भा यम्बर्गाभा। भागा हेचिहरू जे । धर्मन विशिधानमा अभित्रामा भिर्म भारति।

रंग्ण्यक्रा निर्देशकार में के हिंदी कि कि निर्देशकार श्रुवेभागेकावः भारतिश्रुवार्तेः वृद्धभारताम कामन्यां अस्ति मान्य क्षा कर्मा विभागानाम् अध्यक्ष में बेर्गात प्रवास म्याविवीर्धम्याप्य र रामे अविवेश भागवज्ञभाक्त विशिव्यव। उष्टः भक्ताह रमन्यपरिक्तियात्रज्ञ भणाज्य किनेनिका किन्या विः च्छिपिका क. भारम्भाष्य्य छाउ उद्यम्प्रविक्रियेगा भारान्यारिक निरं कार्यारिक निरं के विद्या उने विकस्ता मानिक किया मानिक के प्राप्त के विकास विविश्वाः भरे अविन्ध उज्यक्ति वि मः भाव द्विभाषित्राचा हो भाषित्र भाषा किंपिक्न इसम् इसिट उठ मः भव प्रः अप्रमान्त्रकृतः ययाभन्ता नभने जनिविधिक विक्रिक्ष विश्वास्ति श्यत्मारिये यहित्ययहकार्णाः क्रमदेक्न्यक्ति, स्यम्। अल् र्रथारिक्नानिवचनी योग्भः भवारि रिज्ञ यम्प्रवित्र भूनकारेन्न भागानु रिलंब ले भूमार कर रेव भूके खाने क

उभनकानगं अभा है भाग होना के तक देश धाराः नम्यल्यां भक्षवित्रं भूष्यप्यः इनेक्ष्रं कि स्वार्थित वस युक्र नेक्र नेक्र योत्रिकें जा ॥ यहा उद्भलित्रा उस्मार्शियपम् उ रिट्रियं भारतंत्रमात्रभटरायः भारण्डीय पट सिक्रियप्र उन्निस्ट चेत्राः न्यपारिः यहाराल्यामा द्वारा निर्ध्यर्भे उरु वित्र क्या क्या कि सम्भाग भार बदा लेखिभिडिभुरुभक्षन न् लवला मनेक्ना गुर्म नेक्शित्रें उस्भगवायन वेष्ट्रभा जना उन्धन रिज्यिषुः उस्टिय हेमिक्विम्यल उम्बद्धित्वार्डः भंगोर्गिन्ति वरिवर्गि चार प्रचित्रिंभिति धरमेर प्रमित्र ले।मीख्रियां ज्यानेक्षि। ५१उ भगर्थनिर्भुलंगिवम् धंनिरुष् निर्हि । भ उतु च उक् इं विमेष है विमे धः द्रवाहिनः। विमय कि उत्भागभ एकाक ठव गीत ल्या भाग तथा हु वाकरनभेड्ड वार्तिनकरें डेव

जिल्लानिक स्टूनिक भारति उत्तर जमा नन्तिमधानिक भारति उत्तरिक जिल्लानिक धान्सभाव उत्तरिक क्रमून थ्याण्यानिक धान्सभाव उत्तरिक क्रमून थ्याण्यानिक धान्सभाव उत्तरिक क्रमून थ्याण्यानिक धान्सभाव उत्तरिक स्थान क्रमून क्रमूक स्थानिक स्थानि

उद्भाण्यम् । विश्व क्षेत्राच्या । विश्व क्षेत्राच विष्य क्षेत्राच विष्य क्षेत्राच विष्य विष्

म्हण्य व्यापिमिधः भिकृति। सर्व भा नंध्रववरुष्य प्रतिन द्वर्षे॥ नगरः स्व रूपिक भव म्हण्य का विज्ञाद्विः उस्थावक नी नरूप्त नुद्धः मुक्षां इं मन्भावणिकण लाउं धेने कुण्य। राज्य विशास मान्यक वन्नि भित्रितम् धीन रुपा। भगवण्ये क्वित्य रुप्त्यः। भूभवायिति। नियः भधवः भभवायः भं योगसान्य निरु डि नण्निर्म यमध्वर्षिक विस्थिति । भित्रभाष्ट्रकार्यः स्वीत्रधाद्यद्यः भायायः भूभावन्य अक्षात्र भार भारता है। विश्वास्ति । उ:स्विध्रिय्णकः भभुगुज्य कार्या । महावाका में के वर्ष मधु इस् वान्य यथिक विभिन्न मभुनुपरंपाभभुनु बुवका न गिल्द्रेन उर्भ्यु हल्ल्यु न्य मिग्राम भेरोगभभवारा व वध प्सिष्ठ नन्सभरायभार वेकिंग निभित्रिक्रिय रूप्या । । ५ कम भान भएमभनयऽ जिस्वागमें किल् गदः। नवुन्द्रकुन्याम् पुरुक्ति रिवद्गाने पहिंचे चुंच जिसिरे पृष्ट मान्यस्य मध्यार्थान्य म्य भुडम् ध्रुक्त इन्समय येन प्राः उ उस्जीहियभाजन स्या किंत्रन

3.

उष्रियम् कितिश्रहनंउउ विभिन्न वकेकि विश्वेष्ट्रके विश्वेषेत्र में के ति ना भएड विविधिष्ठ, ने धिन्य विन्धुरुयभि हरित्रध्यकं विसिध्र नस्यो पहीरिविसिश्चरुकनविष उत्रभः त्राजा पृत्रयोग्यभंद्यगा वित यभनभरागर्भनिं वाज्यभवायि दिएडफः॥ भक्षा इनमेशियय जिन्मार । एतीयम् ध्रुभी प्रभ क्र द्वान्य क्रम्भान विमिन्न धुरु उर्रोत ताविमध्यन्भाष्ट्रमभन विमिध्न योगर्वेक्सियुन्यभावतः। एक्षित %निष्यभगन सिमिधुंभयेग्र युविय लिइनेप्रवेट हैं। निरुशीभिके। भगवा यभा ने भग्न भभाव हर यानि व 神子公子:如此到了小小子 न नुभुभभेत्र तकत्विकित्वाना श्रमभवायम्कद्वेतुपवाना । सम्प्रान्

भ्यम्भवा यस्मे म्यादिवयप्रभा यु भविमिष्ठभगवाया विकागार्वया सुर्य। मधुर्वितियारिमकायावायावभर्वः जो। इतिभावायनि युष्णभा ॥॥

म्बन्ध स्वाद्य स्वाद स्वा

महानेविहरूजे॥महन ४६॥हराविह नेत्रेमहरा देप्ति ग्रेमिन्द्र नेपानिहरू विषय देश हर्ते दे । मापहिषाविहरू विषय देश हर्ते दे । मापहिषाविहरू विषय देश हर्ते दे । मापहिषाविहरू विषय देश हर्ते । मापहिष्ठ माना रामस्त्री माना देश हर्ते दे । मापहि वेन रामस्त्री माना के दे । मापहि वेन रामस्त्री माना के दे । मापहि वेन स्टूक्ति के माना वा स्टूक्ति है । स्टूक्ति हो स्टूक्ति हो स्टूक्ति हो स्टूक्ति । स्टूक्ति हो स्टूक

गरगद्गारम्यस्यानभरुभवयागद्गारम् मुस्राल्यम् नुस्थितः स्नाम् कारितिकेको ल्वभणक्षेय्रहारेथुप प्रदेशाउँ इहार्सम् इनिक्ना नि थलमान्य यस्त्र नभाग्य रेज्येन उपेने । भुनं में यह रिके भण्ये उस भूणज्ञभव म्बारियक्ष ग्यां म्बार किथानु ने हत्त इस्टन्क इस्मव यस भन्नेन भर्षा हेरा हुए कि महत्तं भभ व उसमवे उरुमा रहा गिरुया जमर वरं रहणाचीत्र निरंध्यार्भ उ विचलां उठिच भरे कपा था उर्रित भडंब उलक् में ने नभवा शिका ना डे विष्युं प्रतिक हे इस भग्न होता विष्यु विष्यु क्रा हिल्लामा स्थापन येथेयर्ण अधिअधंकृत इयिष् रेणम्भितिच्यभाग अतिन्त्रीस्य उग केररा ब्रामद्र वा भाग ने प्रम विडणान्युथलन्त्रभूष्यभः भरिष्ठाः।।

प्रकाशिक्ष्यभूषि उध्यम् मर्भावमा राज्यसंभभवा यन्त्रेष्ट्रमा उनकालिक भभवनिक मभवा यन्त्रेष्ट्रमा उनकालिक भभवनिक मभवा वन्त्रेष्ट्रमा उनकालिक सम्बद्धि स्थानिक भभवा वन्त्रेम्भ्ये नेव भवाषा गर्डा सम्माने स्थानिक स्थानिक

उन्नित्रजी भाषी ॥॥ मडाम्बर्ग दम्भितं नद्मा उन्नितृश प्रियमुद्ध ग्रां म्बर्ग व्यक्त स्वान्त्र दिश्मा मडार्थ में क्ट संत्र नत्र मं उन्नम्भुव प्रमुद्ध जा। र्यंग त्व वर्द्ध भूभिन्न में क्रियम प्रमुद्ध में स्वानित्र म्हार्म स्वार्थ अपने स्वानित्र में उन्न क्राम्भिन च उद्देश स्वार्थ अपने स्वार्थ स्वार्थ अपने स्वार्थ अपने स्वार्थ अपने स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्

र्ज.

उद्दर्गानिहः। नगर्भे स्थित क्रवज्युउद्धिति गरे असेप्रच्यः। ज्यु उड्डे रिनेड स्टूडिन से वर्ड र सिर्मित्रमा भे या रिकः उगुरुयम् पिम्इन्ध्रे १९७३ पक्रयम् नमणीयः उन्ने क्रिन्थकुरेजे उद्देशिभुद्धिन्तुर्भुर गर्ग हें ज्याभाग विकाल येता ये वाउभभारेनः। मननमुत्र रूभथराय ह नारभक्त मन्त्र हेन्द्र हेन्द्र स्थानिक नमुग्र भन्दु उंगन्ने सिन्दियभ्य न नन्। इति। इत्राध्ये इस्था उर् । व्यान्त्रम् व्यान्य वि उ: उपदानिग्महेरुडिनणकभूर् हर्रा उभावनक वन्त्र मान्य इंध्या । । उद्भार माथ्य नायर यश्रात्वस्य विष्णाद्व उभावति मान्यक्डिलक्तान्ति मेरि विश्वामा हु वृत्र हु भी शत्म इंस्में भागवयवणवेषव उत्ति निक्रम भारत है। एडिमार्डि रालां मान् विद्याभिन्या यग ह्वति विभाग भारत उदेव हा भिष्णा चाय हे दे हैं है। क्षिती एं लाइउरहे भग्मय एक मिधन क्ष्णचरविष्यम् ल्डन्युविन्दुन्थर वार्थः धरमुग्यस्य सम्भित्रं स्थाप गण्यम् इत्रम्भाग्य वाष्ट्रीय गत न्त्रीति भेडे निविधान में में में में में ना विश्वान् विद्यालया विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विष्य विश्वास्त विश्वास्त्र वि ट वयव्यवित्र के भावित्री ल व्यव र ने भू अभि देश । एवं वर्ष या या सिं।। नन्रमा जुस क्युगज्यभाभ हुस्व नश्चित्रमग्रीधक्राह्म व्यवस्था न्यथिः।न्यस्यानीन्रुक्ष कि भर्र हो से देश हो कि भर्त है क नग्रभेत्रः ज्ञामस्याक्ष्ययान्ति मन्द्रमध्येमच्य अस्या।। क्रान्य इस्माय इंड क्यूग्र रहा प्रतिमेषाकाता वने वे दे दिश्या वि वीनमालभी। 5-13-12) लर्थिक

या उतिरहेक मुख्या वर्षे क्रियान क्रिया जिल्लारय परास्त्रकर्णवर्ग तंत्रद्वानियत्रअधगतेयाद्रेत्राज्ञानान भावयः भावस्य इत्रभावप्रभावत विमेष्यम ननितिज्ञातिक रिधिक्तियो उद्गानिया उद्गानिया साउउद्याक्त व उउला इबर्टिंग तंत्रत्रथवियोशमान्त्रत धंडयर्थिती हे उर्ग त्वर्भ उउद्गधकरमा यमुध्यमभ्रभाग ने अन्यामिति भारति । ध्यवगन्भवन्यक्रभवतः थारम्बा निज्ञापिः भू लेह्नविज्ञान्याः

भाषित्यान्यः निरंभनि उत्तरमञ्जूषान्यन्यः उत्तर्थः ॥

नन्नम् भूकिं भू येर निभित्रम् की उग्रहरू निभित्रम् की विश्व निभित्रम् कि विश्व निभित्रम्

3°

50

